मच्छर कम मतलब डेंगू कम नहीं होता

डेंगू बुखार सबसे आम वायरल संक्रमण है। गर्म देशों में प्रति वर्ष 5 करोड़ लोग डेंगू ग्रस्त होते हैं। इससे लड़ने का एक ही रास्ता है कि उन मच्छरों को मार दिया जाए जो कि डेंगू वायरस को फैलाते हैं। लेकिन हाल ही में थाइलैंड में किए गए एक सर्वे के अनुसार यह रास्ता डेंगू की सर्वाधिक जानलेवा किस्म को और अधिक प्रबल बनाता है।

हड्डीतोड़ बुखार यानी डेंगू दर्दनाक है, मगर पहली बार का संक्रमण अक्सर जानलेवा नहीं होता। खतरा दूसरी बार में होता है। डेंगू वायरस के चार प्रकार या 'सेरोटाइप' हैं। मान लीजिए आपको सेरोटाइप-ए वाहक मच्छर काटता है और एक साल बाद सेरोटाइप-बी वाहक मच्छर काटता है। जो एंटीबॉडीज़ ए-टाइप के लिए बनाई थी वो बी-टाइप वायरस से जुड़कर उसे खत्म करने की बजाय दोनों मिलकर प्रतिरोधक तंत्र को अति उत्तेजित कर देती हैं, जिसके कारण यह बीमारी डेंगू के घातक प्रकार खूनी डेंगू में बदल जाती है। खूनी डेंगू के कारण 12000 लोग हर साल मरते हैं जिनमें ज़्यादातर बच्चे होते हैं।

डेंगू होने के कुछ सप्ताह बाद तक शरीर में प्रतिरोधक क्षमता होती है, जो अन्य सेरोटाइप को भी खत्म करती है। यदि इसी दौरान सेरोटाइप-बी का संक्रमण हो जाता है तो खूनी डेंगू नहीं होगा। यदि इस अवधि में आपका संपर्क सारे सेरोटाइप से हो जाए तो शरीर में इन सबके खिलाफ एंटीबॉडीज़ बन जाएंगी और आप खूनी डेंगू से बचे जाएंगे।

इस विश्लेषण के आधार पर लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एण्ड ट्रापिकल मेडिसिन के योशिरो नागाओ और

उनके साथियों ने परिकल्पना विकसित की। इसके अनुसार जब बहुत सारे मच्छर होते हैं तो लोगों का संपर्क हर तरह के सेरोटाइप से हो जाता है और वे इनके खिलाफ एंटीबॉडीज़ उत्पन्न कर लेते हैं। जिसके चलते सबके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा हो जाती है और खूनी डेंगू में कमी आती है। लेकिन जब मच्छरों की संख्या में कमी आती है तब लोग कम संख्या में संक्रमित होते हैं और अन्य सेरोटाइप से उनका संपर्क जल्दी नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में खूनी डेंगू होने का खतरा भी बढ़ जाता है।

इस टीम का यह ख्याल है कि यदि मच्छरों को पूरी तरह खत्म कर दिया जाए तो हम डेंगू से बच सकते हैं। मगर मच्छरों की संख्या में थोड़ी कमी खूनी डेंगू को बढ़ावा दे सकती है। यदि आगे और परीक्षणों में यह बात सही पाई जाती है, तो इसके नीतिगत परिणाम आने की संभावना है। ***(स्रोत फीचर्स)***